“मीरा कांत के नाट्य साहित्य का चरित्रगत अध्ययन”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड के

मानव्य विद्या संकाय के अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु, प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूपरेखा

: शोध कर्त्री :

कु.श्रीदेवी बाबुराव बिरादार

: शोध निर्देशक:

डॉ.एन.जी.एमेकर

सहा.प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष

श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय,उदगीर

: अध्ययन केंद्र:

दयानंद कला महाविद्यालय,लातूर

मार्च, 2016

“मीरा कांत के नाट्य साहित्य का चरित्रगत अध्ययन”

भूमिका :

साहित्य जीवन में संतुष्टता प्राप्ति हेतु न अपनाकर उसे मनुष्य जीवन को सभी और से सुखी और सुंदर बनाने की श्रेष्ठ चेष्टा है जिसमें बुद्धि परिष्कार के साथ मन परिमार्जन भी होता है। उसकी विचारशीलता की कसौटी उन्नती पर ही परखी जाती है। साहित्य अथांग सागररुपी अत्यंत व्यापक क्षेत्र है। जिसका अस्तित्व कालजयी, सर्वग्रही है। जो समाज में व्याप्त धर्म, दर्शन, अध्यात्मक, राजनीति, इतिहास, अर्थसत्ता, मानवी स्वभावगुण, संस्कृति, प्रकृति और जीवन से प्रभावित होकर प्रवाहित होता है।

प्रस्तुत शोधप्रबंध मीरा कांतजी के नाटकों का चरित्रगत अध्ययन अपनी और से किया गया प्रयास है। हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में से मैंने अनुसंधान के लिये नाटक विधा को अपनाकर अपनी इस विषय की बढ़ती रुचि बो बाँटने का प्रयास किया है। छात्र अवस्था से ही नाट्य विधा में आकर्षण रहने के कारण इस विधा के प्रति रुचि दिन-ब-दिन बढ़ती गई। मनुष्य जीवन ही मूलत: एक नाटक है। जिसका साक्षात्कार यह विधा कराती है। मनुष्य विश्वरुपी रंगमंच पर नित-नवीन नाटक खेलने पर मजबुर होता है। यह नाटक विधा मनुष्य जीवन की अभिव्यक्ति के लिए सार्थक सिद्ध होती है। जिसके परिणाम स्वरूप मैं हमेशा नाटक विधा से आकर्षित रही। साहित्य के अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक का प्रभाव समाजरूपी प्रेक्षक पर अधिक गहरा तथा स्थायी होता है। अन्य विधाएँ पठन तथा श्राव्य तक सीमित होती है वही पर नाटक श्राव्य और दृश्य होता है। इसके कारण ही वह पाठक तथा समाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है। मनुष्य अन्य इंद्रियों से लिया गया ज्ञान उतना प्रभावी नहीं होता जितना वह वैज्ञानिक दृष्टीकोण से अपनी चक्षुओं से लेता है। इसीलिए नाटक को चाक्षुय यज्ञ भी कहा है।

भरतमुनि के द्वारा तो नाटक विधा के श्रेष्ठता को स्वीकारते हुए इसे पंचमवेद भी कहा है। नाटक इस विधा के चयन पृष्ठभूमि में मेरे अनेकों अपने वैयक्तिक आकर्षण भी रहे है। जिसके परिणाम स्वरूप मैंने इस विधा का चयन किया है। जो जीवन और साहित्य की धरातल पर समतल रूप में बहता है।

आधुनिक युग के साठोत्तरी लेखिकाओं में लेखन करनेवाली नाटककारों में मीरा कांत का स्थान सर्वोपरी सिद्ध होता है। ये नारी लेखन नारी संवेदनाएँ, नारी मुक्ती की छटपटाहट, कई नई राह की तलाश करती अपनी पहचान बनाने तथा स्त्रि-अस्मिता और अस्तित्व की खोज आधुनिक नारी लेखन में प्राप्त होती है। जिसमें मीरा कांतजी का योगदान सराहणीय प्राप्त होता है। उनके नाट्य साहित्य परंपरा को एक नयी दिशा देता हुआ नये संस्कारों से संजोकर रंगमंच के माध्यम से पाठक तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण यज्ञ रहा है। नारी परिवार में हमेशा से नींव के पत्थर की भूमिका अदा करती है। इसी नारी लेखन पर मीरा कांत जी का नाट्य साहित्य 'मील का पत्थर' शायद न होगा परंतु नींव का पत्थर जरूर बनता नजर आता है। मीराजी के इसी योगदान से प्रभावित होकर मैंने कांतजी के व्यक्तित्व तथा नाट्य साहित्य से परिचित होने, समझने, परखने के साथ ही आज के सामायिक जीवन के साथ जोड़कर उसका विवेचन करने हेतु यह शोधकार्य अपनाया है। मीराजी के साहित्य में निहित जीवन की यथार्थता, सत्यता भूमी को प्रस्तुत करना और उसकी महत्त को स्थापित करना ही मेरे शोधकार्य का उद्देश है।

मीरा कांतजी का साहित्य वस्तुपक्ष पुराण, इतिहास, राजनीति, साहित्य की कटाक्षता, आधुनिकता से संबंधित है। जिसमें स्त्री-प्रश्न, जीवन की स्थितियाँ, मानव-संबंधों की गहरायी नापना, संघर्ष, त्रासदी, विसंगतियों का दंश, प्रेमानुभुति का परिष्कार, विस्थापन आदी का चित्रण है। जिसमें कल्पना की दुनिया न होकर जीवन की संघर्ष भरी भावानुभुती की अभिव्यक्ति के लिए साहित्य को माध्यम बनाया है। मीरा कांत जी के

नाटकों की कथा, पात्र एवं स्थितियों का निर्वाचन पुरे प्रसंगों पर होने पर भी समकालीन यथार्थ बिंदुओं का रेखांकन है।

मीरा कांत आधुनिक काल की नयी महिला लेखिकाओं की शृंखला में विशेष स्थान प्राप्त करती है। विविध नये-नये आयामों को विविध प्रश्नोंद्वारा नाट्य साहित्य को रंगमंच पर उतारा है। मीराजी का नाट्य साहित्य समग्र रूप से उभर उठा है।

प्रस्तुत शोधकार्य को निम्नलिखित षष्ठम् अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय : हिंदी नाट्य साहित्य और मीरा कांत

द्वितीय अध्याय : मीरा कांत का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

तृतीय अध्याय : मीरा कांत के नाटकों का कथानक

चतुर्थ अध्याय : मीरा कांत के नाटकों के पुरुष चरित्र

पंचम अध्याय : मीरा कांत के नाटकों के स्त्री चरित्र

षष्ठम् अध्याय : मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

परिशिष्ट : संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रथम अध्याय प्रथम अध्याय में हिंदी नाट्य साहित्य और मीरा कांत है। हिंदी नाट्य साहित्य भारतीय नाट्य साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है। राष्ट्रीय आंदोलन, समाज सुधार आदि बातें नाटकों के माध्यम से जनता तक पहुँची है। हिंदी नाट्य विधा अपने जन्म से लेकर आज तक यह कार्य अविरत रूप में कर रही है। स्वाधिनता संग्राम ओर भारतीय जनजागरण में तथा भारतीय सामाजिक पूनर्जागरण में इस विधा ने अपना विशेष योगदान दिया है। हिंदी नाटक विधा का यह कार्य स्वाधिनता प्राप्ति के बाद भी शुरू है। आज भी यह दृक-श्राव्य विधा जनता में जागृति का महनिय कार्य कर रही है।

हिंदी नाट्य विधा ने परिवर्तन के अनेक स्तरों को भी सफलता से पूर्ण किया है। आज दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श तथा अत्याधूनिक सभी विमर्श नाटकों का विषय बने है। इसी श्रृंखला में स्त्री केंद्रित नाटकों को लेकर अनेक लेखक तथा लेखिकाएँ सामने आयी है। इनमें मीरा कांत विशेष है। मीरा कांत ने भारतीय नारी मन को अपने नाटकों का विषय बनाया है। वर्तमान समय में स्त्रीयों के प्रश्नों को लेकर नाटक लिखनेवाली लेखिकाओं में वह शीर्षस्थ है।

द्वितीय अध्याय में मीरा कांत के व्यक्तिव एवं कृतित्व पर विवेचन किया जाएगा। जिसमें मीराजी का जन्म, बाल्यावस्था, शिक्षा, संस्कार, विवाह, पारिवारिक जीवन, साहित्यिक अभिरुचि, विदेश यात्राएँ, पुरस्कार उन पर हुए विभिन्न विचारों का प्रभाव आदी प्रस्तुत होगा। साथही मीरा कांत जी के नाटककार, उपन्यास, कहानीकार आदी रुपों पर प्रकाश ड़ाला जाएगा। हिंदी नाट्य क्षेत्र मे मीराजी ने एक ओर इतिहास, पुराण से संबंधित तो दूसरी और आधुनिक परिवेश का ताना बुनने का सफल प्रयास किया है। आधुनिक नाटक को पुनःश्च रंगभुमी की आधुनिकता प्रदान की है। इसलिए वो नाटक को दो केंद्र से एक जगह बांधनेवाली सुत्रधार बनी है। उनके इसी प्रतिभावान बहुमुखी प्रतिभा के धनी रूप को प्रस्तुत किया जाएगा।

तृतीय अध्याय में मीरा कांत जी के नाटकों का कथानक को प्रस्तुत किया जाएगा। मीराजी के नाट्य साहित्य का कथ्यगत विवेचन प्रस्तुत होगा। मीरा कांत के नाट्य साहित्य का कथानक विविधताओं से भरा है।

‘ईहामृग’ नाटक में मीराजीने मानवी प्रवृत्ति तथा मानव स्वभाव-संबंधों की गहराई को प्रस्तुत किया है। ‘नेपथ्यराग’ में आधुनिक कामकाजी स्त्री जीवन की व्यथा, दर्द, पीड़ा प्रस्तुत हुई है। ‘भुवनेश्वर दर भुवनेश्वर’ यह नाटक हिंदी के नाटककार भुवनेश्वर प्रसाद के जीवन पर आधारित है। ‘कंधे पर बैठा था शाप’ यह मीराजी की

नाट्यत्रयी है। जिसमें संस्कृत साहित्य की महाविभुति कालिदास के जीवन तथा देहांत की यवनिका को प्रस्तुत किया है। 'मेघ प्रश्न' यह नाटक कालिदास के प्रकृति का अंग मेघ की भावाभिव्यक्ती तथा यक्ष की प्रेमानुभुति का परिष्कार प्रस्तुत करता है। 'काली बर्फ' यह मीराजी का नाटक आधुनिक कश्मिर के विस्थापित समस्याओं को प्रस्तुत करता है। 'बहती व्यथा सतीसर' यह नाटक पौराणिक कथानक के माध्यम से कश्मीर प्रश्न पर भावाभिव्यक्ती करता है। 'अंत हाजिर हो' में स्त्रीसुरक्षा के प्रति सचेत होकर उसके पारिवारिक हिंसा को वाणी प्रदान की है। 'पुनर्रपि दिव्या' यह इस युग के स्त्री-विमर्श और दलित-विमर्श की प्रतिध्वनि की एक विनम्र नाट्य प्रस्तुती है। 'हुमा को उड जाने दो' यह नाटक पौराणिकता को प्रस्तुत करता है। 'उत्तर प्रश्न' में आधुनिक स्त्री जीवन का संघर्ष प्रस्तुत हुआ है। 'तीन अकेले साथ-साथ' मीराजी की यह नाट्यत्रयी है जिसमें उन्होंने स्त्री जीवन की विवशता, दर्द, पीड़ा, त्रासदी को मुखरित किया है। अर्थात मीराजी के नाट्य का कथानक विविधताओं से भरा है। उसका अंकन इस अध्याय में किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय में मीरा कांतजी के नाटकों के पुरुष चरित्रों का अध्ययन किया जाएगा। मीराजी एक सजग नाटककार है। इन्होंने सामाजिक जीवन की समस्याओं को नाटकों का विषय बनाया है। इनके चरित्र भी सामाजिक जीवन से जुड़े है। सामाजिक जीवन के चरित्रों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। यह पुरुष चरित्र गुण-दोष से प्रस्तुत आधुनिक जीवन में विचरन करते है। उनमें कुछ गुण हैं तो कुछ दोष भी हैं। इसका ही इस अध्याय में अध्ययन किया जायेगा। साथ नाटकों में आनेवाले प्रमुख तथा गौण चरित्रों का सूक्ष्मता से चित्रण प्रस्तुत किया जायेगा।

पंचम अध्याय के अंतर्गत मीरा कांतजी के नाटकों के स्त्री-चरित्रों का अध्ययन किया जाएगा। मीराजी एक स्त्री नाटककार हैं। उनके नाटकों के विषय स्त्री जीवन से

संबंधीत है। उन्होंने आधुनिक स्त्री जीवन को पौराणिक, ऐतिहासिक, आधुनिक चरित्रों के माध्यम से प्रस्फुटित किया है। उनके साहित्य का केद्रबिंदु स्त्री चरित्र ही है। नारी जीवन की व्यथा इन्ही चरित्रों से वर्णित हुई है। उनके नाटकों के स्त्री चरित्रों को और उनके विषमताओं को इस अध्याय में परखा जायेगा। उनके नाटकों के सभी मुख्य तथा गौण स्त्री चरित्रों को अध्ययन पंचम अध्याय में किया जायेगा।

षष्ठ्म अध्याय में मूल्यांकन एवं निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। जिसमें मीरा कांतजी के नाटकों के पुरुष चरित्रों तथा स्त्री चरित्रों का तथा समग्र शोधकार्य का मूल्यांकन कर वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्रस्तुत किए जायेंगे।

अंत में परिशिष्ट के रूप में संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत की जायेगी।

शोध-निर्देशक

डॉ.एमेकर एन.जी.

शोधकर्त्री

कु.बिरादार श्रीदेवी बाबुराव